कैसा [illegible] रिवाज है कि जिसे जीते
जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिले,
उसे मरने पर नया कफन चाहिए।

प्रेमचंद

जिस समाज में [illegible]
[illegible] मनुष्य [illegible]
और [illegible] आँका जाता [illegible]
[illegible] हुआ है
और समाज की व्यवस्था [illegible]
हुई [illegible] और [illegible]
[illegible] है। [illegible]

[illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible] है, और [illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible] हुए हैं। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है कि [illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible]